

डॉ. रॉबर्ट पीटरसन, रहस्योद्घाटन और शास्त्र, सत्र 15, नए नियम में विशेष रहस्योद्घाटन, पवित्र शास्त्र, प्रमुख अंश, 1 कुरिन्थियों 14:37-38।

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन और रहस्योद्घाटन और पवित्र शास्त्र पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 15 है, नए नियम में विशेष रहस्योद्घाटन, पवित्र शास्त्र। मुख्य अंश: 1 कुरिन्थियों 14:37-38।

2 तीमुथियुस अध्याय 3, आयत 14 से 17. हम प्रकाशितवाक्य और पवित्र शास्त्र के सिद्धांतों का अध्ययन जारी रखते हैं और हम पवित्र शास्त्र का परिचय दे रहे हैं, जिसमें हमने दो अंशों को देखा है जो पुराने नियम के बारे में यीशु के दृष्टिकोण के बारे में बताते हैं। उनमें से एक यूहन्ना 10 में था, परमेश्वर के वचन को तोड़ा नहीं जा सकता।

दूसरा, मार्क 12, जहाँ दाऊद, यीशु ने कहा, पवित्र आत्मा द्वारा या पवित्र आत्मा में बोलते हुए, कहा, प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा और इसी तरह। अब, इससे पहले कि हम दो महान प्रेरणा पाठों, 2 तीमुथियुस 3 और 2 पतरस 1 पर पहुँचें, एक जो इस संदर्भ में आम तौर पर उद्धृत नहीं किया जाता है, 1 कुरिन्थियों 14:37, और 38। 1 कुरिन्थियों 14:33 से शुरू करते हैं, क्योंकि परमेश्वर भ्रम का परमेश्वर नहीं है, बल्कि शांति का परमेश्वर है।

संतों की सभी कलीसियाओं की तरह, स्त्रियों को भी कलीसियाओं में चुप रहना चाहिए, क्योंकि उन्हें बोलने की अनुमति नहीं है, लेकिन कानून के अनुसार उन्हें आज्ञाकारी रहना चाहिए। यदि उन्हें कुछ सीखना है, तो वे घर पर अपने पतियों से पूछें, क्योंकि कलीसिया में स्त्री का बोलना लज्जा की बात है। या क्या परमेश्वर का वचन तुम से आया? या क्या केवल तुम ही तक पहुँचा है? यदि कोई अपने आप को भविष्यद्वक्ता या आत्मिक समझता है, तो उसे यह स्वीकार करना चाहिए कि जो बातें मैं तुम्हें लिख रहा हूँ, वे प्रभु की आज्ञा हैं।

यदि कोई इसे नहीं पहचानता, तो वह पहचाना नहीं गया। इसलिए मेरे भाइयों को भविष्यवाणी करने की उत्सुकता है और अन्य भाषा बोलने से मना नहीं करना चाहिए, लेकिन सभी बातें सभ्य और क्रम से की जानी चाहिए। पौलुस ने कुरिन्थियों को फटकार लगाई।

क्या परमेश्वर का वचन तुम्हारे लिए आया था? क्या तुम ही एकमात्र ऐसे लोग हो जिन तक यह पहुँचा है? वह उन्हें फटकार रहा है। और फिर वह ये शब्द कहता है। अगर कोई सोचता है कि वह एक भविष्यद्वक्ता या आध्यात्मिक व्यक्ति है, तो उसे यह स्वीकार करना चाहिए कि जो बातें मैं तुम्हें लिख रहा हूँ, वे प्रभु की आज्ञा हैं।

यहूदी संदर्भ में, या इस मामले में, यहूदी ईसाई संदर्भ में, पॉल, जो गैर-यहूदियों का प्रेरित था, एक हिब्रू ईसाई है। यह एक अद्भुत कथन है। बिल्कुल एक अद्भुत कथन।

अपने लेखन को परमेश्वर की आज्ञाओं के स्तर पर रखते हुए। पौलुस ने कुरिन्थ की कलीसिया में दुर्व्यवहार को सुधारने के लिए लिखा। यह भविष्यवाणी और अन्यभाषा के उपहारों के उपयोग के बारे में था।

ऐसा लगता है कि कुछ कुरिन्थियों का व्यवहार अव्यवस्थित है। पौलुस उनसे आग्रह करता है कि वे सब कुछ शालीनता और क्रम से करें। 1 कुरिन्थियों 14:40.

वह व्यंग्यात्मक ढंग से अलंकारिक प्रश्नों का उपयोग करते हुए कुरिन्थियों को इस तथ्य से रूबरू कराता है कि वे अपने स्वयं के तरीकों पर जोर देते हैं और परमेश्वर के तरीकों को अनदेखा करते हैं। पद 36. पौलुस को अपने शब्दों के प्रेरितिक अधिकार पर जोर देने के लिए मजबूर होना पड़ता है।

यदि कोई अपने आप को भविष्यद्वक्ता या आत्मिक जन समझता है, तो उसे यह जान लेना चाहिए कि जो कुछ मैं तुम्हें लिखता हूँ, वह प्रभु की आज्ञा है। यदि कोई इसे अनदेखा करता है, तो उसे अनदेखा किया जाएगा।

1 कुरिन्थियों 14:37 और 38. पौलुस कुरिन्थियों की कलीसिया के आध्यात्मिक स्वास्थ्य की कामना करता है। वह उस कलीसिया से अपील करता है, जिसके पास आध्यात्मिक वरदानों की भरमार है, कि वह पहचाने कि वह परमेश्वर का प्रेरित और भविष्यद्वक्ता है।

इस प्रकार, वह जो लिखता है वह “प्रभु की आज्ञा” है। पद 37. यदि कोई पौलुस के शब्दों की उपेक्षा करता है, तो वह और अन्य विश्वासी उस व्यक्ति की उपेक्षा करेंगे।

यह परमेश्वर द्वारा अस्वीकार किए जाने के समान है। पौलुस अपने शब्दों को इस तरह अधिकारपूर्ण मानता है। वह अपने शब्दों को इस तरह अधिकारपूर्ण मानता है।

इस प्रकार पौलुस कुरिन्थ की कलीसिया में व्यवस्था लाने के लिए अपने प्रेरितिक अधिकार का प्रयोग करता है। हालाँकि, वह उनके आध्यात्मिक उपहारों के उपयोग को दबाना नहीं चाहता, बल्कि वह चाहता है कि वे परमेश्वर के वचन के अधीन ऐसे उपहारों के अपने उपयोग को विनियमित और व्यवस्थित करें। 1 कुरिन्थियों 14:39 और 40.

पॉल सिखाता है कि उसके लेखन परमेश्वर की आज्ञाएँ हैं और उन्हें ईश्वरीय अधिकार के रूप में ग्रहण किया जाना चाहिए और उनका पालन किया जाना चाहिए। पहली शताब्दी ईस्वी के एक यहूदी व्यक्ति के लिए ये भारी दावे हैं। वह अपने लेखन को परमेश्वर के पुराने नियम की आज्ञाओं के समान स्तर पर रखता है। इस प्रकार वह प्रथम कुरिन्थियों के इस भाग और, विस्तार से अपने सभी पत्रों के लिए प्रेरणा और ईश्वरीय अधिकार का दावा करता है।

विशेषकर 2 पतरस 3:15 और 16 पर ध्यान दीजिए, जिसमें प्रेरित पतरस ने पौलुस के पत्रों को पवित्रशास्त्र के समान बताया है। 2 तीमुथियुस 3:15 और 16. और पतरस लिखता है, हमारे प्रभु के धीरज को उद्धार समझो, जैसा हमारे प्रिय भाई पौलुस ने भी उस ज्ञान के अनुसार जो उसे मिला, तुम्हें लिखा है।

जैसा कि वह अपने सभी पत्रों में करता है जब वह इन मामलों के बारे में बोलता है। उनमें कुछ ऐसी बातें हैं जिन्हें समझना कठिन है, जिन्हें अज्ञानी और अस्थिर लोग अपने ही विनाश के लिए तोड़-मरोड़ कर पेश करते हैं, जैसा कि वे अन्य शास्त्रों के साथ करते हैं। पतरस पौलुस के अपने पौलुस के पत्रों में लिखे गए लेखों को मानता है, लेकिन पौलुस द्वारा लिखी गई हर बात को शास्त्र, पवित्र शास्त्र नहीं मानता।

2 तीमुथियुस 3:14 से 17. मुझे लगता है कि धर्मशास्त्र के सिद्धांत का निर्माण करते समय यह ऐतिहासिक रूप से सबसे महत्वपूर्ण पाठ है। संदर्भ को अच्छी तरह समझने के लिए मैं 2 तीमुथियुस 3, 1 से शुरुआत करूंगा।

2 तीमुथियुस 3:1 परन्तु यह जान ले कि अन्तिम दिनों में कठिन समय आएंगे। क्योंकि लोग स्वार्थी, लोभी, अभिमानी, अभिमानी, गाली देनेवाले, माता-पिता की आज्ञा टालनेवाले, कृतघ्न, अपवित्र, निर्दयी, दोष लगानेवाले, असंयमी, क्रूर, भलाई से बैर रखनेवाले, विश्वासघाती, लापरवाह, घमण्डी, परमेश्वर के नहीं बरन सुखविलास ही के चाहनेवाले होंगे, वे भक्ति का दिखावा तो करेंगे पर उसकी शक्ति को न मानेंगे। ऐसे लोगों से दूर रहो, क्योंकि उन में ऐसे लोग भी हैं, जो घरों में घुसकर दुर्बल स्त्रियों को वश में करते हैं, जो पापों से दबी और नाना प्रकार की अभिलाषाओं से भटकी हुई हैं, और सदा सीखती तो रहती हैं पर सत्य की पहिचान तक कभी नहीं पहुंचतीं।

जैसे जन्नस और यम्ब्रस ने मूसा का विरोध किया था, वैसे ही इन लोगों ने भी सत्य का विरोध किया, ये लोग मन से भ्रष्ट हैं और अपने विश्वास के बारे में अयोग्य हैं। लेकिन वे बहुत दूर नहीं जाएंगे, क्योंकि उनकी मूर्खता सभी के सामने स्पष्ट हो जाएगी।

जैसा कि उन दो लोगों का था। हालाँकि, तुम, 2 तीमुथियुस 3:10, मेरी शिक्षा का पालन किया है, पौलुस तीमुथियुस को लिखता है, मेरा आचरण, जीवन में मेरा लक्ष्य, मेरा विश्वास, मेरा धैर्य, मेरा प्रेम, मेरी दृढ़ता, मेरे उत्पीड़न और मेरे दुख जो अन्ताकिया, इकुनियुम और लुस्त्रा में मेरे साथ हुए, जो उत्पीड़न मैंने सहा, फिर भी उन सभी से प्रभु ने मुझे बचाया। वास्तव में, जो लोग मसीह यीशु में एक ईश्वरीय जीवन जीने की इच्छा रखते हैं, उन्हें सताया जाएगा, जबकि दुष्ट लोग और धोखेबाज़ धोखा देते हुए और धोखा खाते हुए बुरे से बुरे होते चले जाएंगे।

परन्तु तेरे विषय में, जैसा कि पौलुस ने तीमुथियुस को लिखा है, कि जो बातें तू ने सीखी हैं और जिन पर तुझे दृढ़ता से विश्वास है, उन पर बना रह, यह जानते हुए कि तू ने उन्हें किस से सीखा है, और बालकपन से पवित्र शास्त्र तुझे मालूम है, जो तुझे मसीह पर विश्वास करने से उद्धार प्राप्त करने के लिये बुद्धिमान बना सकते हैं। हर एक पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धार्मिकता की शिक्षा के लिये लाभदायक है। ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिये तत्पर हो जाए। अध्याय चार, मैं तुझे परमेश्वर और मसीह यीशु को उपस्थित करके, जो जीवतों और मरे हुएों का न्याय करनेवाला है, और अपने राज्य में प्रगट होने के विषय में आज्ञा देता हूँ, कि वचन का प्रचार कर, समय और असमय तैयार रह, पूरी धीरज और शिक्षा के साथ डांट, और डांट, और समझा।

क्योंकि ऐसा समय आ रहा है जब लोग अच्छी शिक्षा को सहन नहीं करेंगे, बल्कि उनके कान खुजली करेंगे, वे अपनी इच्छाओं के अनुरूप शिक्षकों को इकट्ठा करेंगे, सत्य को सुनने से दूर हो जाएंगे, और मिथकों में भटक जाएंगे। जहाँ तक तुम्हारा सवाल है, हमेशा शांत रहो, दुख सहो, एक प्रचारक का काम करो, और अपनी सेवा को पूरा करो। ये पौलुस के अधिक आत्मकथात्मक शब्द हैं, लेकिन मैं पहले से ही एक पेय भेंट के रूप में डाला जा रहा हूँ, और मेरे जाने का समय आ गया है, जो उसकी मृत्यु का उल्लेख करता है।

मैंने अच्छी कुश्ती लड़ी और अपनी दौड़ पूरी कर ली; मैंने विश्वास बनाए रखा है; अब मेरे लिए धार्मिकता का मुकुट रखा हुआ है, जिसे प्रभु, जो धर्मी और न्यायी है, मुझे उस दिन देगा। और न केवल मुझे, बल्कि उन सभी को भी जो उसके दर्शन को प्रिय मानते हैं। 3:1 से 9 में, पौलुस अंतिम दिनों में भयानक समय के बारे में बात करता है।

बाइबल के अनुसार अंतिम दिन, निस्संदेह, मसीह के आगमन के बीच का समय है। 1 यूहन्ना 2, श्लोक 18 के आसपास। अरे, भाइयों, यह अंतिम घड़ी है, वह कहता है।

यह दिन बहुत दूर चला गया है, क्योंकि वह कहता है, आपने सुना है कि मसीह विरोधी आ रहा है, यह एकवचन है। पहले से ही कई मसीह विरोधी आ चुके हैं। इस तरह हम जानते हैं कि यह अंतिम घड़ी है।

लेकिन पौलुस भविष्यवाणी करता है कि अंतिम कुछ दिनों में, उसके अंदर भी इन अधर्मी लोगों की तरह भयानक गुण होंगे। हालाँकि, आप, पद 10 एक मजबूत विपरीत है, और आपने मेरा अनुसरण किया है। पौलुस अपने जीवन के विभिन्न क्षेत्रों को सूचीबद्ध करता है, जिसके बारे में वह प्रसन्न है कि उसके शिष्य तीमुथियुस ने उसका अनुसरण किया है। आपने मेरी शिक्षा, उसके सिद्धांत का अनुसरण किया।

मेरा आचरण, पॉल का जीवन जीने का तरीका। जीवन में मेरा लक्ष्य, पॉल ने अपने लक्ष्य तीमुथियुस को बताए हैं। मेरा विश्वास या तो उसका विश्वास या उसकी वफ़ादारी हो सकता है।

मेरा धीरज, मेरा प्रेम, मेरी दृढ़ता, मेरे उत्पीड़न और मेरी पीड़ाएँ। वह अन्ताकिया, इकुनियुम और लुस्त्रा में विशेष रूप से वर्णित करता है। मैंने कौन-कौन से उत्पीड़न सहे, और फिर भी प्रभु ने मुझे उन सब से बचाया।

वास्तव में, यह एक स्थापित सिद्धांत है। जो लोग मसीह यीशु में ईश्वरीय जीवन जीने की इच्छा रखते हैं, उन्हें सताया जाएगा। यह मुझे प्रेरितों के काम के अध्याय 14, प्रथम मिशनरी यात्रा के अंत की याद दिलाता है।

पॉल ने कई उत्पीड़नों के दौरान भी यह पाठ किया। मुझे लगता है कि शायद ल्यूक ने भी ऐसा ही किया होगा।

ऐसा क्यों करता हूँ? मौके पर ही शास्त्रों का हवाला देते हुए। कई उत्पीड़नों के माध्यम से, हमें परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना होगा।

प्रेरितों के काम 14 में, यह बरनबास में पौलुस है। वे शिष्यों की आत्माओं को मजबूत करते हैं, उन्हें विश्वास में बने रहने के लिए प्रोत्साहित करते हैं, प्रेरितों के काम 14:22, और कहते हैं कि कई क्लेशों के माध्यम से, हमें परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना होगा। और जब उन्होंने प्रार्थना और उपवास के साथ हर कलीसिया में उनके लिए प्राचीनों को नियुक्त किया, तो उन्होंने उन्हें प्रभु को सौंप दिया, जिस पर उन्होंने विश्वास किया था।

जो लोग मसीह यीशु में भक्तिपूर्वक जीवन जीते हैं, उन्हें सताया जाएगा। जबकि दुष्ट लोग और धोखेबाज़ बद से बदतर होते चले जाएँगे, धोखा देते रहेंगे और धोखा खाते रहेंगे। यही संदर्भ है।

अंतिम दिनों में अधर्म और धर्मत्याग। 2 पतरस 1 के लिए भी यही बात लागू होती है। यह कोई संयोग नहीं है, हालाँकि मैं इसे आम तौर पर पढ़ाते हुए नहीं देखता कि नए नियम की प्रेरणा के दो महान शास्त्रीय पाठ अंतिम दिनों में झूठी शिक्षा के संदर्भ में हैं। निहितार्थ स्पष्ट है।

शास्त्र उस झूठी शिक्षा का प्रतिकारक है। शास्त्र और उनकी विश्वासयोग्य व्याख्या उस चीज़ का प्रतिकारक है। जहाँ तक तुम्हारा सवाल है, तीमुथियुस, जो तुमने सीखा है और जिस पर दृढ़ता से विश्वास किया है, उसे जारी रखो।

टिमोथी को न केवल उसकी माँ और दादी लोइस और यूनीस ने सिखाया था, बल्कि उसने न केवल इसे मानसिक रूप से आत्मसात किया है, बल्कि इसके बारे में दृढ़ विश्वास भी विकसित किया है। हमारे बच्चों और नाती-नातिनों के लिए यही हमारा लक्ष्य है। आपने जो सीखा है और जिस पर दृढ़ता से विश्वास किया है, उसे जारी रखें।

यह जानते हुए कि तुमने इसे किससे सीखा है। और वह लोइस और यूनीके से है। मुझे, 2 तीमुथियुस 1.5, तुम्हारे सच्चे विश्वास की याद आती है, तीमुथियुस, एक ऐसा विश्वास जो पहले तुम्हारी दादी लोइस और तुम्हारी माँ यूनीके में था, और अब मुझे यकीन है कि यह तुममें भी है।

प्रेरितों के काम से हमें पता चलता है कि तीमुथियुस की माँ, अगर मैं सही हूँ तो उसका नाम वहाँ नहीं दिया गया है, एक गैर-यहूदी व्यक्ति से विवाहित थी, एक यूनानी जो ईसाई नहीं था। बचपन से, इसका अनुवाद इस तरह किया जा सकता है, लेकिन इसका इस्तेमाल स्तनपान करने वाले शिशुओं के लिए भी किया जा सकता है। यह केवल शिशुओं तक ही सीमित नहीं है।

इसका मतलब बचपन हो सकता है, लेकिन इसके कई अर्थ हैं। बचपन से ही आप पवित्र लेखन से कैसे परिचित हैं? शब्द, पवित्र शास्त्र और पवित्र लेखन हैं।

यह शब्द, लेखन, ग्राफे, ग्राफे, केवल नए नियम में शास्त्रों के लिए उपयोग किया जाता है। निश्चित रूप से अन्य प्रकार के लेखन हैं, और उन्हें विभिन्न तरीकों से संदर्भित किया जाता है, लेकिन लेखन शास्त्रों के लिए एक तकनीकी शब्द प्रतीत होता है। जहाँ तक तुम, तीमुथियुस, जो तुमने सीखा है और दृढ़ता से विश्वास किया है, उसे जारी रखो, यह जानते हुए कि तुमने इसे किससे सीखा है, और कैसे बचपन से, तुम पवित्र शास्त्रों से परिचित हो गए हो, जो तुम्हें मसीह यीशु में विश्वास के माध्यम से उद्धार के लिए बुद्धिमान बना सकते हैं।

आम तौर पर, यहाँ व्याख्या पद 16 से शुरू होती है। पवित्रशास्त्र प्रेरित है और इसमें ये चार उद्देश्य हैं, और यह बहुत बढ़िया है, और यह सही है। लेकिन अगर हम इसके ठीक पहले जाएँ, तो हम देखेंगे कि न केवल पवित्रशास्त्र शिक्षा, फटकार, सुधार और धार्मिकता में प्रशिक्षण के लिए अच्छा है, बल्कि यह उद्धारक भी है।

शास्त्र बचाता है। अब, क्या शास्त्रों का होना ही उद्धार है? नहीं, आपके घर में 100 बाइबलें हो सकती हैं और आप उद्धार नहीं पा सकते। नहीं, पौलुस पवित्र लेखन में आनन्दित होता है, जो वास्तव में आपको मसीह यीशु में विश्वास के माध्यम से उद्धार के लिए बुद्धिमान बना सकता है।

मोक्ष के लिए शास्त्रों में आस्था रखना ज़रूरी है, न कि सिर्फ़ शास्त्रों को सीखना। मैंने ऐसे पादरियों की कहानियाँ सुनी हैं जो उद्धार नहीं पाए और जिन्होंने प्रभु को जाना। उदारवादी सेमिनारियों में प्रशिक्षित पादरी, जिन्होंने, इस मामले में, लोगों से मिलकर, प्रभु को जाना।

मैं चाइल्ड इवेंजलिज्म फेलोशिप के लिए एक धार्मिक सलाहकार रहा हूँ और उस आंदोलन और उसके संस्थापक के इतिहास को पढ़ते हुए, मैंने सोचा कि वह एक अच्छे व्यक्ति थे, जिन्हें उनकी पृष्ठभूमि के खिलाफ़, जो उन्हें सिखाया गया था, उसके खिलाफ़ राजी किया जाना था। और उन्हें मना लिया गया। उन्होंने चाइल्ड इवेंजलिज्म फेलोशिप की स्थापना की, जो दुनिया में बच्चों के लिए सबसे बड़ा सुसमाचार प्रचार मंत्रालय है।

सक्रिय रूप से, मेरा मतलब यह नहीं है कि उनके पास 10 साल पहले बाइबल अध्ययन था, मेरा मतलब है कि उत्तर कोरिया को छोड़कर दुनिया के हर देश में बच्चों को बाइबल सिखाने का एक सक्रिय, निरंतर मंत्रालय है। CEF के अध्यक्ष ने मुझे बताया कि हम कोका-कोला से भी ज़्यादा विश्वव्यापी हैं। और साल में दो बार हवाई दक्षिण से उत्तर कोरिया की ओर बहती हैं।

और सी.ई.एफ. 24 पत्रों के धर्मग्रंथ के साथ सुसमाचार पतंगें भेजता है। और अगर कल सीमा खुल गई, तो परिवार उत्तर में अपने रिश्तेदारों के पास जाने के लिए तैयार होंगे, जिनके साथ उस तानाशाह और उसकी साम्यवादी विचारधारा के तहत बहुत बुरा व्यवहार किया जाता है और उन्हें भूखा रखा जाता है। किसी भी मामले में, सी.ई.एफ. के नेता को यह विश्वास दिलाकर बड़ा किया गया था कि बच्चों को बचाया नहीं जा सकता।

मैं अपनी कहानी यहाँ सीधे-सीधे बताने की कोशिश कर रहा हूँ। वह एक कठोर व्यक्ति था, एक बहुत ही दृढ़ इच्छाशक्ति वाला व्यक्ति। और वह कुछ चीज़ों के बारे में अपने विचार बदलने वाला नहीं था।

लेकिन दो लोग उसके पास पहुँचे: पड़ोस का वह लड़का जिसकी संज्ञानात्मक क्षमता और मानसिक क्षमता थोड़ी कम थी। दो बार, वह आदमी अचानक इस आदमी के दरवाज़े पर प्रकट होता है और कहता है, भगवान ने मुझे तुम्हें कुछ बताने के लिए भेजा है। तुम सिर्फ़ अनुग्रह से ही बच गए हो, और बच्चों को भी बचाया जा सकता है।

और उन्होंने कहा कि मैं बहस नहीं करना चाहता। उन्होंने कहा कि मैं अपने किसी भी साथी से टेबल के नीचे बहस कर सकता हूँ। कोई समस्या नहीं।

लेकिन मैं इस आदमी से बहस नहीं करने जा रहा हूँ। उसने दो बार ऐसा कहा। और फिर हत्यारा उसकी संडे स्कूल क्लास की एक 10 साल की लड़की थी।

उसने कहा कि उसे प्रभु में बहुत खुशी है। मुझे पता था कि वह उससे 100 गुना ज़्यादा जानता था। लेकिन वह यीशु में विश्वास करती थी, और उसे उद्धार का आश्वासन था।

और वह न केवल इस बात से आश्चर्य था कि बच्चों को सुसमाचार नहीं सुनाया जाना चाहिए, बल्कि उसके चर्च में 10 साल की लड़की को भी, बल्कि इस बात से भी कि अनुग्रह पर जोर देना निश्चित रूप से गलत है। कानून, कानून, कानून। और परिणामस्वरूप, उसके पास उद्धार का आश्वासन नहीं था।

और तुम नहीं कर सकते थे, लेकिन लड़के, उसके पास यह था। वह बहुत ही उत्साही थी, और यह उसे बस मिल गया था। और उसने पुनर्विचार किया और शास्त्रों को नई आँखों से पढ़ा, और प्रभु ने उसे आशीर्वाद दिया, और वह मसीह में स्वतंत्र हो गया।

ओह, वह एक विरोधी नहीं बन गया। उनका मानना था कि ईसाई जीवन में कानून का स्थान है, लेकिन यह प्रमुख स्थान नहीं है। और वह ईश्वर की कृपा में विश्वास करता था।

और उसके पास एक बोझ भी था। उसने बाल सुसमाचार प्रचार के लिए एक बोझ विकसित किया, जिसके कारण उसने CEF की स्थापना की। बचपन से ही, तीमुथियुस पवित्र लेखन को जानता था जो लोगों को बचाने में सक्षम है।

इसलिए, इस अंश में शास्त्रों की शिक्षा पर विचार किया जाना चाहिए। बाइबल उन लोगों के लिए बचाती है जो मसीह यीशु में विश्वास करते हैं क्योंकि वह शास्त्रों में प्रकट होता है, क्योंकि सुसमाचार वहाँ प्रस्तुत किया गया था। और फिर महान छंद आते हैं।

सभी शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से लिखे गए हैं; सभी शास्त्र थियोपनेस्टोस, परमेश्वर की प्रेरणा से लिखे गए हैं और शिक्षा, फटकार, सुधार और धार्मिकता की शिक्षा के लिए लाभदायक हैं ताकि परमेश्वर का आदमी हर अच्छे काम के लिए सिद्ध और सुसज्जित हो सके। मुझे लगता है कि परमेश्वर की प्रेरणा से लिखे गए शब्द एक नारा और पवित्र शब्द बन गए हैं, जिन्हें मैं शायद नहीं समझता। इसका क्या मतलब है कि शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से लिखे गए हैं? आपका क्या मतलब है? इसका मतलब है कि यह परमेश्वर की प्रेरणा से लिखे गए हैं।

हाँ, ठीक है, खुद ही समझाओ। इसका क्या मतलब है? मुझे भजन 33 में पुराने नियम की अच्छी पृष्ठभूमि मिलती है, जहाँ साँस लेने का प्रतीक बोलने के प्रतीक के समानांतर है। भगवान का बोलना और भगवान का साँस लेना।

भजन 33, छः। यहोवा के वचन से आकाश बना, और उसके मुँह की साँस से उसकी सारी सेना बनी। जहाँ यहोवा का वचन, अर्थात् परमेश्वर का बोलना, उसके मुँह की साँस के समानान्तर है, अर्थात् परमेश्वर की साँस।

सभी धर्मग्रंथ ईश्वर द्वारा प्रेरित हैं, जिसका अर्थ है कि सभी धर्मग्रंथ ईश्वर द्वारा बोले गए हैं। यह उनके पवित्र मुख से आता है। यह ईश्वर द्वारा बोला गया है, जो निश्चित रूप से पवित्र धर्मग्रंथ के लेखक के रूप में ईश्वर से बात करता है।

वह इसका अंतिम लेखक है। हाँ, उसने मानवीय लेखकों का इस्तेमाल किया। पॉल ने यह पत्र लिखा।

लेकिन पुराने और नए नियम दोनों का अंतिम लेखक स्वयं परमेश्वर है क्योंकि सभी धर्मग्रंथ परमेश्वर द्वारा साँस लिए गए हैं। तकनीकी रूप से, हमें प्रेरणा के बारे में बात नहीं करनी चाहिए, जो कि यह है, बल्कि समाप्ति के बारे में बात करनी चाहिए, जो कि यह है। हम बोलते हैं, बोलते समय हम साँस छोड़ते हैं, लेकिन मैं धर्मग्रंथ की समाप्ति के बारे में बात नहीं करना चाहता।

ऐसा लगता है कि ईश्वर मृत धर्मशास्त्र है, और यह भयानक है। यह एक बुरा मजाक था, माफ़ करें। हम प्रेरणा शब्द को बदलने नहीं जा रहे हैं, मेरा विश्वास करें, लेकिन यह शास्त्र ईश्वर द्वारा साँस ली गई है, इसलिए यह उसका वचन है।

यह उससे आता है। यह उसका है। यह उसका उत्पाद है।

सभी शास्त्र ईश्वर द्वारा प्रेरित, ईश्वर द्वारा प्रेरित, ईश्वर द्वारा प्रेरित, ईएसवी, और चार चीजों के लिए लाभदायक हैं: शिक्षण। ईश्वर के वचन से सिद्धांत या शिक्षाएँ सिखाना वैध है। एक धर्मशास्त्री के रूप में यह कहते हुए मुझे वास्तव में खुशी हो रही है क्योंकि मैं यही करता हूँ।

दिलचस्प बात यह है कि धर्मशास्त्र, कैल्विन के वचन की उपयोगिता के अगले दो उदाहरण फटकार और सुधार हैं। धर्मशास्त्र परमेश्वर का वचन है जो उसके पवित्र मुख से निकला है, और यह सिखाने, फटकारने, हमें यह दिखाने के लिए कि हम कहाँ गलत हैं, और सुधार के लिए, हमें यह दिखाने के लिए कि इसे कैसे सही किया जाए, मान्य है। परमेश्वर के वचन का यही सुधार करने वाला गुण भजन 119 में भी है।

यह भजन 19 में भी है। यह महत्वपूर्ण है, और मुझे लगता है कि इसे नजरअंदाज किया जा रहा है। धर्मग्रंथ धार्मिकता में प्रशिक्षण के लिए भी लाभदायक है।

यह बच्चों को प्रशिक्षित करने में इस्तेमाल की जाने वाली एक अभिव्यक्ति है। हम भगवान की संतान हैं। हमें भगवान द्वारा प्रशिक्षित किए जाने की आवश्यकता है।

हमें उसके द्वारा और शायद उन मनुष्यों द्वारा अनुशासित होने की आवश्यकता है जो उसे हमसे बेहतर और लंबे समय से जानते हैं। उस अभिव्यक्ति की व्याख्या करने के लिए, ईश्वर का आदमी,

निश्चित रूप से, सभी लोगों को दर्शाता है, लेकिन इसकी व्याख्या करने के लिए, इसका अर्थ पादरी, एल्डर है। यहाँ मेरा स्रोत 1 तीमुथियुस 6:11 है।

पॉल लिखते हैं, लेकिन हे परमेश्वर के जन, तू इन बातों से दूर रह, धार्मिकता, भक्ति, विश्वास, धीरज, नम्रता का पीछा कर, विश्वास की अच्छी लड़ाई लड़, उस अनन्त जीवन को धर ले जिसके लिए तू बुलाया गया था, और जिसके बारे में तूने अच्छा अंगीकार किया था। तीमुथियुस परमेश्वर का जन है। और फिर, मैं यह कहूँगा, बेशक, 2 तीमुथियुस 3:16 और 17 सभी ईसाइयों पर लागू होता है, लेकिन इसके संदर्भ में, ऐतिहासिक और साहित्यिक दोनों रूप से, परमेश्वर का जन बुजुर्ग, पादरी की बात करता है।

सभी शास्त्र परमेश्वर द्वारा दिए गए हैं और शिक्षा, फटकार, सुधार, बच्चों की शिक्षा और धार्मिकता के लिए लाभदायक हैं, ताकि पादरी हर अच्छे काम के लिए पूर्ण और सुसज्जित हो सके। बाइबल हमारा टूलबॉक्स है। यह हमें वह सब देता है जो हमें प्रभु की सेवा करने के लिए चाहिए।

फिर से, मैं यह कहूँगा कि, बेशक, यह अंश सभी ईसाइयों पर लागू होता है। हे भगवान, लेकिन यह विशेष रूप से उन लोगों से संबंधित है जिनका काम परमेश्वर के वचन का प्रचार करना है। मैं जो कुछ भी मैंने अभी कहा है, उसे स्पष्ट करने, स्पष्ट करने और शायद उसे समझाने के लिए इसे पढ़ता हूँ।

सबसे प्रसिद्ध अंश 2 तीमुथियुस 3:14 और 17 है। पौलुस भविष्यवाणी करता है कि अंतिम दिन कठिन समय होंगे, पद एक। वह अंतिम दिनों के लोगों की पापपूर्ण जीवनशैली का वर्णन करता है, पद दो से नौ तक।

हे मनुष्य, वे भक्ति का रूप धारण करेंगे। वे धार्मिक होंगे, यद्यपि वे इसकी शक्ति को अस्वीकार करेंगे, पद पांच। वे सत्य का विरोध ऐसे लोगों के रूप में करेंगे जो मन से भ्रष्ट हैं और विश्वास के मामले में बेकार हैं, पद आठ।

ऐसी सभी दुष्टता और धर्मत्याग के विरुद्ध, तीमुथियुस शिक्षा और जीवन दोनों में पौलुस के उदाहरण का अनुसरण करता है, आयत 10 और 11। पौलुस तीमुथियुस को चेतावनी देता है कि दुष्ट लोग और धोखेबाज़ और भी बुरे हो जाएँगे, दूसरों को धोखा देंगे और खुद भी धोखा खाएँगे। दूसरों को धोखा देना एक सक्रिय विचार है।

खुद को धोखा देना एक निष्क्रिय विचार है। पद 13 में, पौलुस ने अंतिम दिनों में सैद्धांतिक त्रुटि और नैतिक पतन की भविष्यवाणी की है। परमेश्वर के वचन की प्रेरणा पर दोनों मुख्य अंशों में यही संदर्भ है।

और हमें इस पर ध्यान देने की ज़रूरत है। बाइबल और इसकी शिक्षाएँ और इसकी सेवकाई, वफ़ादार सेवकाई, विधर्म और बुरी नैतिकता के लिए परमेश्वर का प्रतिकारक है। बुरे लोगों और धोखेबाज़ों के विपरीत, आयत 13 में, तीमुथियुस को एक अलग मार्ग पर चलना है।

पौलुस ने उसे चेतावनी दी कि वह परमेश्वर के वचन की अच्छी शिक्षाओं में आगे बढ़ता रहे। तीमुथियुस की दादी लोइस और माँ यूनीके, जो 2 तीमुथियुस का पाँचवाँ हिस्सा थीं, ने उसे उचित सिद्धांत और आचरण के बारे में निर्देश दिया है। उसने यह निर्देश प्राप्त किया है और इसके बारे में दृढ़ विश्वास विकसित किया है।

अध्याय तीन, श्लोक 14 और 15. तीमुथियुस बचपन से ही पुराने नियम के पवित्र लेखन को जानता है। वह कितना धन्य है।

पौलुस पुराने नियम को पवित्र शास्त्र के रूप में वर्णित करता है जो तीमुथियुस को उद्धार के लिए बुद्धिमान बना सकता है। पद 15, ये पवित्र लेख यीशु मसीह में उद्धारकारी विश्वास का संदेश देते हैं। और मैं कह सकता हूँ कि ये पवित्र लेख ही उस संदेश को देते हैं।

पौलुस बताता है कि क्यों पवित्रशास्त्र पापियों को बचा सकता है। प्रत्येक पवित्रशास्त्र अंश, सभी पवित्रशास्त्र, परमेश्वर द्वारा प्रेरित है: पद 16, ईएसवी।

पौलुस ने परमेश्वर को साँस लेते हुए या अपना वचन बोलते हुए चित्रित किया है। भजन 33, छः देखें। इसका मतलब है कि शास्त्र परमेश्वर का वचन है।

परमेश्वर पवित्र शास्त्र का स्रोत है। पौलुस आगे बाइबल को उपयोगी या लाभकारी बताता है। वह चार क्षेत्रों का उल्लेख करता है जिसमें बाइबल सिखाने, निर्देश देने, फटकार लगाने, दोषी ठहराने, सुधारने, सुधारने और धार्मिकता में प्रशिक्षण के लिए उपयोगी है।

शास्त्रों की उपयोगिता का उद्देश्य परमेश्वर के जन, पादरी या एल्डर को पूर्ण बनाना है। 1 तीमुथियुस 6:11 देखें जो हर अच्छे काम के लिए सुसज्जित है।

दूसरा तीमुथियुस तीन 17. पवित्रशास्त्र पादरी को कुशल बनाने और उसे परमेश्वर और लोगों की सेवा के लिए योग्य बनाने में सक्षम है। पादरी को पवित्रशास्त्र का प्रचार करना है, जिसे पॉल ने केवल वचन कहा है।

ताकि चर्च पर भी यही प्रभाव पड़ सके। चार, एक से पांच। इस अविश्वसनीय अंश में, हम बाइबल की प्रेरणा के बारे में बहुत कुछ सीखते हैं।

पहला, धर्मग्रंथ ईश्वर से प्रेरित है।

दूसरा, धर्मग्रंथ को परमेश्वर के वचन के बराबर माना गया है।

तीसरा, लेखन स्वयं शब्दों से बना होता है, न कि केवल लेखकों से जो प्रेरित होते हैं।

चौथा, हम जो विश्वास करते हैं और जिस तरह से जीते हैं, उसके लिए शास्त्र आधिकारिक है। पाँचवाँ, शास्त्र प्रभावी है, एक शक्तिशाली उपकरण है जिसका उपयोग परमेश्वर हमें बदलने के लिए करता है। हमारे अगले व्याख्यान में, हम अंतिम महान प्रेरणा अंश को कवर करेंगे।

दूसरा तीमुथियुस 16 से 21. इससे पहले कि हम इस बात पर चर्चा शुरू करें कि सदियों से शास्त्र की प्रेरणा को किस रूप में समझा जाता रहा है। आयत 14 से 17.